जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 33 संख्याः 104 प्रभात उदयपुर, रविवार 15 फरवरी, 2026 आर.जे. 7202 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

अमेरिका व यूरोप के बीच कुछ मेल मिलाप की स्थिति बनी?

अमेरिका के ''सेक्रेटरी ऑफ स्टेट'' (विदेश मंत्री) मार्क रूबियो के वक्तव्य से उन रिश्तों में कुछ मिठास लौटी

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- लगभग एक साल से यूरोप व अमेरिका के बीच रिश्तों में कुछ खटास आ गई, जब से अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे.डी. वैंस ने सार्वजनिक रूप से कहा था कि अब समय आ गया है कि यूरोप अपनी सुरक्षा की स्वयं ही जिम्मेवारी संभाले। उपराष्ट्रपति वैंस ने यह भी कहा था कि अमेरिका अब यूरोप की सुरक्षा का खर्चा नहीं उठायेगा।
- मार्क रूबियो ने उपराष्ट्रपति की टिप्पणी को काटा तो नहीं, पर, बड़े मीठे शब्दों में कहा कि अमेरिका यूरोप की ''संतान'' है। अमेरिका बिना यूरोप के कुछ भी नहीं। अमेरिका का केवल ढाई सौ साल पुराना इतिहास है, न ही पुराना साहित्य और न ही यूरोप जैसा आर्किटैक्चर (स्थापत्य कला) की पृष्ठभूमि है।
- ट्रंप की ग्रीनलैंड को अधिग्रहित करने की स्कीम ने भी यूरोपीय देशों को निद्रा से जगा दिया और यूरोपीय देशों को आपस में व्यापारिक रिश्ते बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रेरणा को और मजबूती मिली ''रूसो फोबिया'' (रूस से भयभीत होने की आदत) से।
- मार्क रूबियो के ठंडे ''छीटों'' से यूरोप ने कुछ आराम तो महसूस किया, पर, अमेरिका व यूरोप के मौलिक मतभेद फिर भी बरकरार हैं।

नई दिल्ली, 14 फ़रवरी। वार्षिक म्यूनिख सिक्युरिटी कॉन्फ्रैंस (एमएससी) जो दुनिया का सबसे प्रभावशाली और ताकतवर सुरक्षा मंच बन चुका है, में अमेरिका और यूरोप जैसे सहयोगियों के बीच रिश्तों में कुछ नरमी देखने को मिली।

पिछले साल के सम्मेलन में अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे.डी. वेंस ने यूरोप के नेताओं को चौंका दिया था। उन्होंने यूरोप की रक्षा जरूरतों को पूरा करने में उसकी पूरी तरह नाकामी की कड़ी आलोचना की थी। वेंस ने यह भी कहा था कि यूरोप अपनी सोच और नीतियों के कारण सभ्यता के मिटने के करीब पहुंच गया है।

वेंस के भाषण के बाद, एक साल तक द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से सबसे करीबी सहयोगी रहे यूरोप और अमेरिका के रिश्तों में दूरी बढ़ने लगी थी। अमेरिका ने चेतावनी दी थी कि वे अब यूरोप की सुरक्षा का पूरा खर्च नहीं उठाएगा।

इस साल के सम्मेलन में अमेरिका के विदेश मंत्री मार्क रुबियो ने ज्यादा नरम रुख अपनाया। उन्होंने कहा कि अमेरिका और यूरोप एक साथ जुड़े हुए हैं। उन्होंने यहां तक कहा कि अमेरिका, यूरोप की ही संतान है। पिछले साल वेंस की कड़ी आलोचना के बाद रुबियो का भाषण यूरोपीय देशों के लिए राहत देने वाला रहा।

संभवतः वैलेंटाइन डे के मौके पर रुबियो उस महाद्वीप को नाराज नहीं करना चाहते थे जिसे कभी अमेरिका का ''मातृ देश'' कहा जाता था। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि यूरोप को अपने मूल मूल्यों और सभ्यतागत जुड़ाव को फिर से मजबूत करना चाहिए, जिसने दोनों को साथ जोड़ा था।

आखिर यूरोप के बिना अमेरिका क्या है, उसका इतिहास 250 साल से ज्यादा पुराना नहीं है, उसके पास यूरोप जैसी साहित्यिक परंपरा नहीं है और न ही यूरोप जैसी वास्तुकला, संगीत या युद्धों का इतिहास है।

कुल मिलाकर, मार्क रुबियो ने यूरोपीय उदारवादी देशों और अमेरिका के बीच सोच के बुनियादी अंतर को बनाए रखा। इन यूरोपीय देशों का प्रतिनिधित्व फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री सर कीर स्टारमर और जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज जैसे नेता करते हैं।

अमेरिकी मूल्यों में ईसाई धर्म और यूरोप की विरासत को बचाने के लिए इमिग्रेशन पर अंकुश लगाना शामिल है। ये विचार भले ही अभिजात्य वर्ग से दूर हों, पर दक्षिणपंथियों के अनुकूल हैं।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'पिच से ज्यादा तनाव पिच के बाहर होता है'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 फरवरी। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के कप्तान सलमान अली आगा ने भारतीय खिलाड़ियों से हाथ मिलाने के सवाल पर बेहद चतुराई से जवाब दिया।

आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप में भारत और पाकिस्तान के बीच मुकाबले से पहले का माहौल हमेशा की तरह

- पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के कप्तान सलमान अली आगा ने भारतीय खिलाड़ियों से हाथ मिलाने के सवाल पर गोल-मोल जवाब दिया।

बेहद रोमांचक है, लेकिन मैदान के बाहर तनाव अक्सर ज्यादा भारी महसूस होता है।

कोलंबो में इस हाई-प्रोफाइल मुकाबले की पूर्व संध्या पर पत्रकारों से भरे हॉल में खड़े पाकिस्तान कप्तान सलमान अली आगा आक्रामक से ज्यादा चिंतनशील नज़र आए। उन्होंने सिर्फ रणनीति की ही बात नहीं की, बल्कि क्रिकेट के उस सीधे, सरल दौर की वापसी की इच्छा जताई, जब दर्शकों का शोर खेल के लिए होता था, न कि भू-राजनीतिक परिस्थितियों के लिए।

जब उनसे पूछा गया कि यदि भारतीय खिलाड़ी आगे बढ़कर हाथ मिलाने की पहल करें तो क्या वे तैयार

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'कट्टरपंथी हिंदुत्व व भारत में शेख हसीना की उपस्थिति से असहज है बांग्लादेश'

बांग्लादेश के भावी प्रधानमंत्री तारिक रहमान के सलाहकार हुमायूं कबीर ने एक इन्टरव्यू में भारत-बांग्लादेश के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों में दो बाधाएं गिनाई

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- तारिक रहमान के अनुसार, शेख हसीना ने 1500 व्यक्तियों को मरवा कर, भारत में पनाह ली है।
- तारिक रहमान के अनुसार, पाकिस्तान में भी धार्मिक कट्टरपंथी विचार पनप रहे हैं, इन कट्टरपंथी सोच पर नियंत्रण रखने के लिए, भारत व बांग्लादेश में आपसी सहयोग व जानकारियां साझा करने की जरुरत है।
- भारत को यह ज्ञात होना चाहिए कि शेख हसीना व अवामी लीग का अब कोई अस्तित्व नहीं है बांग्लादेश में तथा अब बांग्लादेश स्वतंत्र विदेश नीति अपनाना चाहता है। पिछले 15 वर्षों में बांग्लादेश की विदेश नीति पूर्णतया भारत की विदेश नीति का अनुसरण करती आई है पर अब बांग्लादेश एक संतुलित विदेश नीति अपनाना चाहता है।
- पर, विदेश नीति से ज्यादा भावी प्र.मंत्री की प्राथमिकता होगी बांग्लादेश को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना। इस ''डोमैस्टिक प्राथमिकता'' के पूर्ण होने पर बांग्लादेश के प्र.मंत्री, मोदी के निमंत्रण पर भारत आएंगे।

नई दिल्ली, 14 फरवरी। हाल ही में हुए चुनाव में भारी जीत के बाद बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) ने भारत के सामने दो अहम चिंताएं उठाई हैं। पहला, दक्षिण एशिया में बढ़ते कट्टरपंथ और भारतीय समाज में हिंदू उग्रवाद तथा अतिदक्षिणपंथी असहिष्णुता का मुद्दा। दूसरा, दोनों देशों के बीच रिश्तों को फिर से ठीक करना, जिसमें भारत को ''शेख हसीना जैसे आतंकी को रोकने की ज़रुरत को समझने की ज़रुरत बताई गई है, जिनपर 1500 या इससे ज्यादा लोगों की हत्या का आरोप है, और जो भागकर भारत आ गई हैं।

बीएनपी अध्यक्ष और संभावित बांग्लादेश प्रधानमंत्री तारिक रहमान के सलाहकार हुमायूं कबीर ने बढ़ते कट्टरपंथ के मुद्दे को सामान्य रूप में उठाया। उन्होंने पाकिस्तान और बांग्लादेश में मौजूद उग्रवादी तत्वों का भी जिक्र किया, हालांकि उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में इसका स्तर कम है। उन्होंने कहा, इसी कारण हमें आतंकवाद विरोधी सबूत और आकलन साझा करने तथा सहयोग मजबूत करने की ज़रुरत है। इस सोच में बदलाव लाने के लिए कबीर ने जिम्मेदारी भारत पर डालते हुए कहा कि ''भारत को समझना चाहिए कि

(शेष पृष्ठ 5 पर)

PARAMETER	VICTORIS S-CNG	COMPETITION MID SUV DIESEL	BENEFIT OF VICTORIS S-CNG OVER DIESEL CARS
Running Cost/km	₹4	~ ₹6.1	✓ More savings per km
Lower Maintenance Cost	✓	✗	✓ Easy on pocket
Reduced Emission	✓	✗	✓ Good for environment
Recovery Period#	~3.8 Yrs	~11.1 Yrs	✓ Faster recovery